BAOU Education for All
NAAC A++
॥ चैतन्य ॥ CHAITANYA
ISSN : 2582 2802
A Refereed and Peer - Reviewed International e-Journal of Humanities and Social Sciences
by School of Humanities and Social Sciences
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad

श्रीमद्भगवद् गीता में वर्णित जीवन मूल्यों की शिक्षा में प्रासंगिकता : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के संदर्भ में

वागीश दुबे
शोधार्थी (शिक्षा संकाय)
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार
ईमेल :
मो. – 9415288797

डॉ. विवेकानंद सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षा संकाय)
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार
मो. – 9415504903

सार-संक्षेप

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की संकल्पना का आधार भारतीय ज्ञान परंपरा तथा पृष्ठभूमि भारतीयता है। चूंकि ज्ञान के प्रस्फुटन का प्रथम केंद्र बिंदु भारत है और मानवीय जीवन–मूल्यों की संकल्पना का आधार भारतीय चिंतन है और वेद, उपनिषद्, गीता, पुराण आदि उसके परिणाम। श्रीमद्भगवद् गीता सिर्फ एक आध्यात्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह मनुष्य मात्र के उत्थान एवं कल्याण का एक व्यावहारिक ग्रन्थ है। शिक्षा मनुष्य के निर्माण की आधारशिला है, परंतु श्रीमद्भगवद् गीता मनुष्य म मनुष्यता के गुणों के सृजन का एक दर्शन एवं प्रकाशपुंज है। भारत की उत्कृष्ट धार्मिक, सांस्कृतिक और जीवन मूल्यों को समझने का ऐतिहासिक–साहित्यिक साक्ष्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 संपूर्ण जन–मन के मन मानस के मूल चिन्तन की मौलिक अभिव्यक्ति है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल अवधारणा श्रेष्ठ मानव का निर्माण एवं उसका विकास से है। वस्तुतः गोता मानव मूल्यों का अकूत भण्डार है। गीता हृदय में धारण करने योग्य महानतम् सीख है। गीता जीवन को पूर्णत्व की ओर ले जाने का साधन है। शिक्षा उसमें सहायता प्रदान करने की सर्वोत्तम साधन है। मनुष्य जीवन का संपूर्ण कृतित्व उसका जीवन दर्शन ही उसका जीवन मूल्य है। व्यक्ति जिस विचार को श्रेष्ठ मानता है उसी विचार के अनुरूप उसका व्यवहार हो जाता है।

शब्द संक्षेप : जीवन मूल्य, मूल्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, भगवद् गीता

प्रस्तावना :

सृष्टि की सर्वोत्कृष्ट रचना मानव है, जो अनादि काल से चिन्तनशील रहा है। वह अपनी चिन्तन शक्ति के फलस्वरूप अन्य प्राणियों से भिन्न है। जीव जगत के विकास के इतिहास में उसकी वर्तमान स्थिति उसके निज् विचारों की ही देन है। वैचारिक सम्पदा के कारण ही वह सृष्टि के चेतन–अचेतन तत्त्वों से लाभ लेने में सफल हुआ है। पशुओं के भी चक्षु आदि इंद्रियाँ होती हैं। वे उनसे ज्ञान भी प्राप्त करते हैं किंतु उनमें विचार करने की क्षमता विकसित नहीं होती है। इसलिए अल्पसत्त्व मनुष्य अति बल–संपन्न पशुओं को अपने हित साधन में नियोजित करता रहा है। वह अपने साथ–साथ मानवता के हित के प्रति भी सर्वथा समर्पित रहा है। मनुष्य का हित उसकी शांत एवं सुखद् जीवन–यात्रा की संपन्नता में निहित होती है। अंतः उन्नति से शांति प्राप्त होता है और बाह्य उन्नति से सुख प्राप्त होता है। मानव की अंतः उन्नति तथा बाह्य उन्नति की आवश्यकता ही क्रमशः जीवन मूल्यों की जननी है। जीवन मूल्यों को प्रायः मानवीय उत्थान की एक सन्दर्भिका के रूप में अवलोकित किया जाता है। किसी भी मानव की उन्नति के आकलन हेतु उसके द्वारा व्यतीत जीवन को देखा जाता है। 'कृष्णं वंदे जगत गुरूम्' – संसार के गुरू भगवान श्री कृष्ण के श्री मुख से निःसृत परम रहस्यमयी दिव्य वाणी श्रीमद्भगवद् गीता है।

श्रीमद्भगवद् गीता के चतुर्थ अध्याय के अड़तालीसवें श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को संबोधित करते हुए कहते हैं कि –

"न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्र महि विद्यते।

तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।।"

अर्थात इस पृथ्वी पर ज्ञान के सदृश पवित्र वस्तु और कोई नहीं है। जो व्यक्ति योग द्वारा पूर्णता को प्राप्त हो जाता है वह समय आने पर स्वयं अपने अंदर ही अपने इस ज्ञान को प्राप्त कर लेता है। अन्त में आत्मसंयम से यह ज्ञान मनुष्य के मन में प्रकट हो जाता है। श्रीमद्भगवद् गीता प्रायः दो प्रकार के ज्ञान का प्रतिपादन करती है –

1. वह जो बुद्धि के द्वारा बाह्य जगत के अस्तित्त्व को समझने का प्रयास करता है।
2. वह जो अन्तर्दृष्टि के बल से इन असमान घटनाओं की श्रृंखला की पृष्ठिभूमि में जो परम तत्त्व है उसे ग्रहण करता है।

मनुष्य की आत्मा जब तार्किक बुद्धि के अधीन रहती है तो अपने को प्रकृति के अंदर खो बैठने के प्रति प्रवृत्त होती है और उसी की गतिविधि के साथ अपना तादात्मय समझने लगती है। जीवन के विवरणों को बुद्धि के द्वारा जानने का नाम विज्ञान और यह साधारण ज्ञान से भिन्न है अथवा समस्त जीवन के सामान्य आधार का संपूर्ण ज्ञान है। ये दोनों एक ही पुरूषार्थ के दो भिन्न पक्ष हैं। समस्त ज्ञान ईश्वर का ज्ञान है।

अध्ययन के उद्देश्य

- श्रीमद्भगवद् गीता में निहित जीवन मूल्यों का अध्ययन करना
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में वर्णित जीवन मूल्यों का अध्ययन करना

तकनीकी शब्दों का परिभाषोकरण

''श्रीमद्भगवद् गीता'' –

भगवान श्री कृष्ण द्वारा नर श्रेष्ठ अर्जुन के भय, शोक और संताप का हरण करने के लिए तथा जीव मात्र के कल्याण के निमित्त दिया गया संपूर्ण भू–मण्डल में एक मात्र अलौकिक, अनुपम तथा अप्रतिम ज्ञान का प्रकाश पुंज एक आध्यात्मिक ग्रंथ है, जिसकी मान्यता संपूर्ण विश्व में है।

श्रीमद्भगवद् गीता के अनुसार शिक्षा –

'अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च।।' 10/20

अर्थात इस श्लोक में अर्जुन को गुडाकेश कहकर संबोधित किया गया है जिसका अर्थ है, "निद्रा रूपी अंधकार को जीतने वाला।" जो लोग अज्ञान रूपी अंधकार में सोए हुए हैं, उनके लिए समझ पाना संभव नहीं है कि भगवान किन–किन विधियों से इस लोक में तथा बैकुण्ठ लोक में प्रकट होते हैं। अतः श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन के लिए इस प्रकार का संबोधन महत्त्वपूर्ण है। चूंकि अर्जुन ऐसे अंधकार से ऊपर है अतः श्री भगवान उसे विविध ऐश्वर्यों को बताने के लिए तैयार हो जाते हैं।

भारतीय चिंतन में शिक्षा को विद्या कहा गया है। ज्ञान दो प्रकार के हैं –

I. लौकिक ज्ञान
II. पारलौकिक ज्ञान

इसी ज्ञान को गीता में अपरा और परा विद्या कहा गया है। ज्ञान, प्रज्ञा व सत्य की खोज भारतीय विचार परंपरा तथा दर्शन में सदा से ही उच्चतम मानवीय लक्ष्य माने जाते रहे हैं। प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन या फिर विद्यालय के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान का अर्जन नहीं अपितु पूर्ण आत्मज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया है। शिक्षा तो एक साधन मात्र है, जो व्यक्ति के अंतनिहित गुणों को प्रस्फुटित करती है। उसकी जो योग्यता, क्षमता होती है वह उसी के अनुरूप पल्लवित होता है। गीता के महात्मय के संबंध में एक श्लोक कहा गया है कि –

सर्वोपनिषदों गावो दोग्धा गोपालनंदनः।
पार्थो वत्सरू सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतंमहत।।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में निहित जीवन मूल्य

शिक्षा नीति किसी भी राष्ट्र की मूलभूत आवश्यकता होती है, जिसमें अतीत का विश्लेषण, वर्तमान की आवश्यकता तथा भविष्य की संभावनाएँ निहित होती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अवधारणा समता एवं समानता मूलक समाज का निर्माण करना है। जिस व्यक्ति के आचरण एवं व्यवहार में इस प्रकार के मानवीय मूल्य विकसित होते हैं उसका नैतिक और जीवन मूल्य श्रेष्ठ होते हैं। श्रीमद्भगवद् गीता मनुष्य में इसी प्रकार के मानवोचित कर्म को करने के लिए प्रेरित करती है तथा उसके अंदर निहित कलुषित विचार को शुद्ध करके उसे श्रेष्ठ आचरण की प्रेरणा प्रदान करती है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने जिन उदारता पूर्वक शिक्षा को धर्म, दर्शन, मूल्य तथा जीवन मूल्यों के सृजन तथा परिवर्तन का काम मानते हुए कहते हैं कि "शिक्षा का अंतिम उत्पाद एक ऐसे स्वतंत्र रचनात्मक व्यक्ति का निर्माण होना चाहिए जो ऐतिहासिक परिस्थितियों और प्रकृति की विपत्तियों से जूझ सके।"

जीवन सरल भी है और संघर्ष युक्त भी है। इन दोनों अवस्थाओं के मध्य खड़ा मानवीय जीवन की पूर्णता का आधार श्रीमद्भगवद् गीता में वर्णित दिव्य, श्रेष्ठतम तत्त्वज्ञान और उस तत्त्व ज्ञान के प्रकाश में विकसित हुई मानवीय संस्कृति ही मनुष्य को श्रेष्ठतम जीवन कौशलों में व्यवहृत होने की प्रेरणा प्रदान करती है। जिस मनुष्य की चेतना परम तत्त्व और परम ज्ञान में अवस्थित हो जाती है उसका जीवन परम प्रकाश से युक्त हो जाता है। जहाँ एक ओर गीता सामाजिक कर्त्तव्यों पर बल देती है, यह सामाजिक स्थिति से ऊपर की एक अवस्था मानती है। यह भारत की भूमि है जहाँ युद्ध में धर्म है। आज पूरे विश्व के जीवन चक्र में धर्म में युद्ध हो गया है। धर्म धारण करने के उद्देश्य से इसमें प्रतिपादन किया गया था। श्रीमद्भगवद् गीता में छः प्रकार के मानवीय जीवन मूल्यों का वर्णन प्रायः देखने को मिलता है –

1. मन और बुद्धि में स्थिरता
2. धर्मानुसार कर्त्तव्यों का पालन करते हुए जीवन निर्वाह करना
3. भगवान की भक्ति में संलग्न रहना
4. ज्ञान प्राप्ति के लिए विशेष नियमों का पालन करना
5. गुणातीत की तरह व्यतीत करना
6. दैवी प्रकृति का होना

मूल्य –

श्रीमद्भगवद् गीता में मूल्य को बड़े व्यापक रूप में प्रस्तुत किया गया है। श्रीमद्भगवद् गीता शाश्वत मूल्यों का भण्डार है। मूल्य का शाब्दिक अर्थ है – उपयोगिता, वांछनीयता अथवा महत्त्व। मूल्य शब्द अंग्रेजी भाषा में Value के समानार्थी है जो लैटिन भाषा के Valere (वैलेयर) शब्द से बना है जिसका अर्थ है – Be strong, Be well। संकुचित अर्थ में मूल्य का अर्थ है कि क्या अच्छा है, क्या बुरा है, क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। वास्तव में व्यक्ति द्वारा अपने लिए अपनाय गये जीवन के सामान्य सिद्धांत अथवा नियमों या मानकों को ही मूल्य कहते हैं। मूल्य हमारे व्यवहार को निर्देशित एवं नियोजित भी करते हैं। भारत में ऋषियों मनीषियों ने जिन प्राचीन मूल्यों की आधारशीला रखी है वह सत्यम–शिवम्–सुन्दरम है। हमारा जीवन दर्शन 'सा विद्या विमुक्तये' दूसरे की तुलना में श्रेष्ठ समझते हैं। मूल्य वह गुण या विचार है जो व्यक्ति या समाज के लिए सम्माननीय, उपयोगी या मूल्यवान है। इस अर्थ में जीवन मूल्य ऐसी आचार संहिता है, जिससे व्यक्ति अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन पद्धति का निर्माण करता है। तथा अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। मूल्यों में व्यक्ति की धारणा, विश्वास, मनोवृत्ति एवं आस्था आदि सम्मिलित है। व्यक्तिगत रूप से मूल्य अंतःकरण द्वारा निर्धारित होते हैं तथा सामाजिक रूप से ये परंपरा एवं संस्कृति से उत्पन्न एवं पोषित है तथा उसके पोषक भी हैं।

स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार शक्ति, निर्भयता और निःस्वार्थ सेवा ही जीवन का मूल्य है। उन्हें विश्वास था कि हर व्यक्ति में असाधारण क्षमता होती है और व्यक्तित्व के आंतरिक संगठन के माध्यम से व्यक्ति अपनी क्षमता को पहचान सकता है। वे सामाजिक हित के लिए निःस्वार्थ सेवा को महत्त्व देते हैं और उसे अपनी दिव्यता का प्रदर्शन करने का माध्यम मानते हैं।

जीवन मूल्य व्यक्ति को इस प्रकार विकसित करती है कि वह चिंतन अनुभूति और क्रियात्मकता से उचित एवं नैतिक बन सके। अर्थात उसका चिंतन अनुभूति और कार्य सही दिशा में विकसित हो। जीवन मूल्य से व्यक्ति में नैतिक मूल्यों, मानवीय गुणों, सेवा, सहिष्णुता, सयम, श्रम के प्रति निष्ठा, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता जैसे गुणो का विकास होता है।

आधुनिक काल में बहुत सारे आधुनिक मूल्य विकसित हो रहे हैं। जैसे – परानुभूति, धन कमाने, धन बचाने, सहयोग करने, मित्रता करने के नए मूल्य एवं प्रतिमान विकसित हो रहे हैं। आधुनिक भारत में सभी स्तरों की शिक्षा का अधिकाधिक विकास किया जा रहा है और विज्ञान, विदेशों के साथ संपर्क तथा ज्ञान के प्रसार का भरसक प्रयास किया जा रहा है।

मूल्य व्यक्ति के मानवीय आचरण तथा व्यवहार का मापदण्ड होते हैं। इसका आधार मनुष्य के अनुभव, सामाजिक संस्कृतियाँ एवं सामाजिक परंपराएँ होती हैं। आज मूल्य की अवधारणा बदलती जा रही है। भारतीय दृष्टिकोण के मूल्य का तात्पर्य योग्यता, उपयोगिता व महत्त्व है। संस्कृति में मूल्य का आशय है – ईष्ट अर्थात वह जो कि इच्छित है। वास्तव में मूल्य वह मानदण्ड हैं जिनके द्वारा लक्ष्या का चयन किया जाता है।

जीवन दर्शन में भिन्नता के कारण व्यक्ति के मूल्यों में भिन्नता उत्पन्न होती है। मूल्य हमारे जीवन में सही कर्म करने में पथ प्रदर्शक होते हैं और शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य पढ़ना, लिखना ही नहीं बल्कि एक अच्छा इंसान बनना भी है।

प्रबुद्ध चिन्तक 'अर्बन' ने मूल्य की तीन परिभाषाएँ दी हैं – प्रथम, जो मानवीय इच्छा की तुष्टि करे वही मूल्य है। द्वितीय, मूल्य वह वस्तु है जो जीवन को सदैव विकास की ओर ले जाती है। तृतीय, मूल्य वह है जो व्यक्तियों को विकास अथवा आत्मविकास या आत्मानुभूति की ओर ले जाती है।

मूल्यों का मानव के साथ चिरंतर संबंध रहा है। मानव की उन्नति और विकास मूल्यों पर ही आधारित रहते हैं। मानव मूल्य ही मानव को अनेक जीवधारियों से पृथक करता है। मानव की क्रिया, संगठन, व्यक्तित्व, समाज और सभ्यता जैसी महान व्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में मूल्य वांछनीय है। जीवन मूल्य संबंधी सभी सिद्धांत प्रगति और समृद्धि हेतु होते हैं। मूल्य का समाज से गहरा सम्बन्ध है। इसलिए शैक्षिक व्यवस्थाओं में सदैव ही इसकी चर्चा होती चली आ रही है। आज इसकी परम आवश्यकता है और इसी बात को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने **वैल्यू एजुकेशन का एक वैल्यू क्लस्टर** प्रस्तुत किया है, जिसमें निम्न आधारभूत सिद्धांत रखे गए हैं –

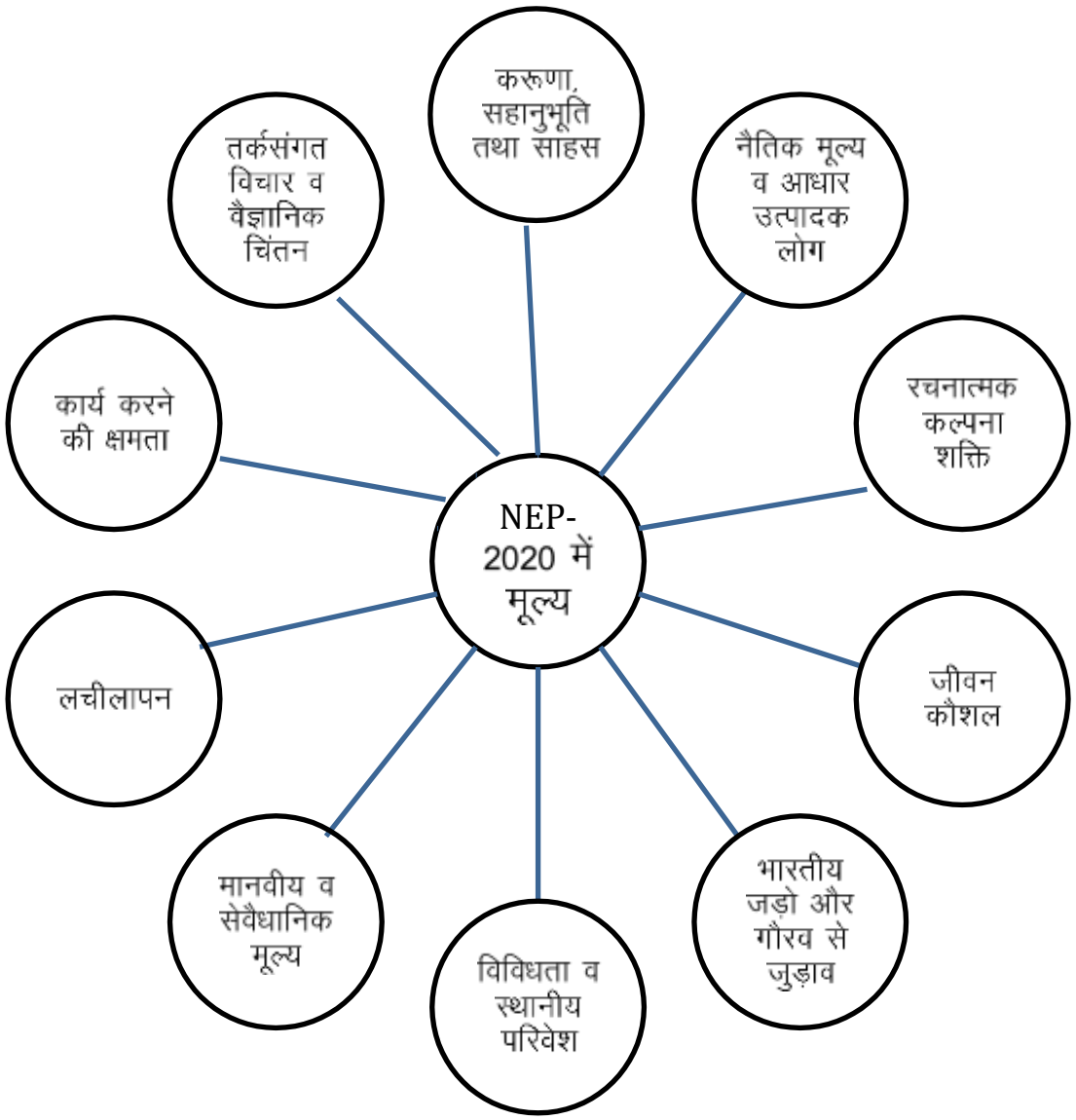

प्रबुद्ध चिन्तक 'अर्बन' ने मूल्य की तीन परिभाषाएँ दी हैं – प्रथम, जो मानवीय इच्छा कहते हैं कि –

ये तु धम्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते।
श्रद्धधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव में प्रियाः।।

धर्ममय अमृत को निष्काम भाव से सेवन करने वाला व्यक्ति सदैव सुखी रहता है। गीता के अनुसार सत्य, दया, शान्ति, ब्रह्मचर्य, शम, दम, तितिक्षा, यक्ष, दान, तप, अध्ययन, अध्यापन को धर्म का क्षेत्र माना जाता है। वस्तुतः गीता वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शाश्वत सुख व शान्ति का मार्ग है। वस्तुतः गीता मानव मूल्यों का भंडार है।

महान दार्शनिक एरिक फॉम न 1975 में अपनी पुस्तक **'टू नॉट ऑर टू हैव'** में अपनी बात रखते हुए कहते हैं कि "विज्ञान इतना आगे बढ़ चुका है कि हम चाँद पर चले गए हैं अंतरिक्ष के रहस्यों को खोज रहे हैं, लेकिन हमने अभी तक ऐसा विज्ञान नहीं बनाया जो एक अच्छा इंसान बनाए।" राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने इस चुनौती को स्वीकार करके मूल्यों की शिक्षा को एक नए कलेवर नए तेवर के साथ लेकर आई है। मूल्य वर्द्धन के माध्यम से इसमें सतत सीखते रहने की प्रक्रिया का प्रावधान है।

सुप्रसिद्ध अमरीकी दार्शनिक हेनरी थ्यूरो ने कहा है कि, "हर रोज मैं अपने मस्तिष्क को गीता के महान एवं विश्वव्यापी फलसफे से स्नान करवाता हूँ। गीता ज्ञान के सामने विश्व के दूसरे सब ज्ञान तुच्छ लगते हैं।"

डॉ. एल्डुअस हक्सले ने लिखा है, "गीता शाश्वत दशा में कभी भी रचे गए सबसे स्पष्ट और सबसे सर्वांगीण, संपूर्ण सारांशों में से एक है इसलिए न केवल भारतीयों के लिए अपितु संपूर्ण मानव जाति के लिए इसका इतना स्थायी मूल्य है। संभवतः भगवद गीता शाश्वत दर्शन का सबसे अच्छा सुसंगत आध्यात्मिक विवरण है।"

उत्तमः पुरूषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहतः
यो लोक त्रयमाविश्य विमर्त्यब्यय ईश्वरः।। 15/16

भागवत् पुराण के अनुसार धार्मिक जीवन के चार पहलू हैं –

1. तप
2. पवित्रता (शौच)
3. करूणा (दया)
4. सच्चाई (सत्य)

निष्कर्ष :

भारत एक प्राचीनतम राष्ट्र है। सभ्यता के उदय का साक्षी है तथा उस उदित तथा मानवीय मूल्यों का संरक्षक भी है। श्रीमद्भगवद्गीता मानवीय जीवन की श्रेष्ठ आचार संहिता है। एक विश्व विख्यात नीति शास्त्र है। इसमें भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को लोक कल्याण के निमित्त उपदेश किया है। श्रीमद्भगवद्गीता का मुख्य संदेश 'निष्काम कर्म' है। श्री भगवान ने मोहरूपी निद्रा में सोये हुए मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा तथा कर्म बन्धन से मुक्त होने के मार्ग बताए हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने ज्ञान, भक्ति एवं कर्म तीनों मार्गों की महिमा बताई है किंतु निष्काम कर्म को सुगम एवं उत्तम साधन के रूप में स्वीकार किया गया है। यह एक ऐसा अमृत रस है जिसके पान करने से प्राणी जन्म–मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता की महिमा अगाध और असीम है। इसका प्रभाव देश काल की सीमाओं में आबद्ध नहीं है। श्रीमद्भगवद्गीता लोक कल्याण के निमित्त अनुपम धरोहर है।

संदर्भ

1. श्रीमद्भगवद्गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर
2. तिलक, लोकमान्य बाल गंगाधर, 2016, गीता रहस्य, अर्चना पब्लिकेशन, दिल्ली
3. श्रीमद्भगवद्गीता, मोटे अक्षरवाली, गीता प्रेस, गोरखपुर
4. मालवीय, राजीव, 2006, श्रीमद्भगवद् गीता में सन्निहित शैक्षिक मूल्यों एव शैक्षिक नियोजन के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन, शोध प्रबंध
5. डॉ. सिंह, मधुरिमा, 2012 शिक्षा के आधारभूत सिद्धांत, राखी प्रकाशन, आगरा
6. रूहेला सत्यपाल एवं भार्गव महेश, 2012 उभरते भारत में शिक्षा, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा
7. डॉ. प्रसाद, राजेन्द्र 2012 साहित्य शिक्षा और संस्कृति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
8. डॉ. शर्मा. एस. एन. एवं डॉ. शर्मा अंजना, 2012, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, माधव प्रकाशन, आगरा
9. पाण्डेय, रामशकल, 2013, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगरा पब्लिकेशन, आगरा
10. ओड. एल.के., 2017, शैक्षिक प्रशासन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
11. डॉ. राधाकृष्णन, 2016 भारतीय दर्शन राज्यपाल एण्ड सन्स
12. www.books.google.com
13. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार